पाठ 11 नौबतखाने मे इबादत (यतींद्र मश्र)

"यतींद्र मश्र" का जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान

जीवन परिचय

यतींद्र मश्र एक प्र सद्ध हिंदी लेखक, क व और संस्कृति वशेषज्ञ हैं। उनका जन्म 10 अक्टूबर 1977 को उत्तर प्रदेश के अयोध्या में हुआ था। उन्होंने लखनऊ वश्व वद्यालय से हिंदी साहित्य में शक्षा प्राप्त की और बाद में साहित्य एवं संगीत के क्षेत्र में गहन शोध कार्य कया।

उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, संगीत और इतिहास की गहरी छाप है। वे न केवल एक लेखक हैं, बल्कि एक कुशल संपादक और सांस्कृतिक वचारक भी हैं।

साहित्यिक योगदान

यतींद्र मश्र ने हिंदी साहित्य को कई उत्कृष्ट कृतियाँ प्रदान की हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न ल खत हैं:

1. प्रमुख कृतियाँ

- "भीमसेन जोशी: संगीत और जीवन" – इस पुस्तक में पं डत भीमसेन जोशी के जीवन और संगीत की गहरी व्याख्या की गई है।
- "कथासरित्सागर" – यह पुस्तक भारतीय लोककथाओं और सांस्कृतिक वरासत पर आधारित है।
- "अयोध्या: नगरी उजड़ी नहीं" – अयोध्या के इतिहास और सांस्कृतिक महत्व पर एक महत्वपूर्ण कृति।
- "स्मृति के शहर" – यह काव्य संग्रह उनकी क वताओं का संकलन है, जिसमें स्मृतियों और अनुभूतियों को शब्द दिया गया है।

2. संपादन कार्य

यतींद्र मश्र ने कई पत्रिकाओं और पुस्तकों का संपादन कया है, जिनमें "वागर्थ" और "नया ज्ञानोदय" जैसी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाएँ शा मल हैं।

3. पुरस्कार और सम्मान

- साहित्य अकादमी पुरस्कार (2015) – "भीमसेन जोशी: संगीत और जीवन" के लए।
- व्यास सम्मान (2018) – हिंदी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लए।
- मै थलीशरण गुप्त पुरस्कार – साहित्यिक सेवाओं के लए।

निष्कर्ष

यतींद्र मश्र हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति के एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्य प्रे मयों, बल्कि संगीत और इतिहास में रु च रखने वालों के लए भी प्रेरणादायक हैं। उनका लेखन भारतीय परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संगम प्रस्तुत करता है।

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद कया जाता है?

उत्तर **1:**

• शहनाई की दुनिया में डुमराँव को वशेष रूप से याद कया जाता है क्यों क यहाँ के नवासी उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ, जो वश्व प्र सद्ध शहनाई वादक थे, का जन्म हुआ था।
• शहनाई में इस्तेमाल होने वाली रीड (नरकट), जो एक प्रकार की घास होती है, डुमराँव के सोन नदी के कनारों पर अ धकतर पाई जाती है।
• इस प्रकार, शहनाई और डुमराँव के बीच एक गहरा सांस्कृतिक और ऐतिहा सक संबंध है।

प्रश्न 2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर 2-

• शहनाई का उल्लेख पारंपरिक अवधी लोकगीतों और चैती में बार-बार कया गया है।

• शहनाई को एक ऐसा वाद्य माना जाता है, जो मंगलमयी वातावरण का निर्माण करता है। इसका उपयोग वशेष रूप से मांग लक अवसरों पर होता है।

• उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ शहनाई वादन के क्षेत्र में बेजोड़ कलाकार माने जाते हैं। उनके शहनाई वादन ने इसे एक नई पहचान दिलाई, जिसके कारण उन्हें शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा जाता है।

प्रश्न 3. सु षर-वाद्यों से क्या अ भप्राय है? शहनाई को 'सु षर-वाद्यों के शाह' की उपा ध क्यों दी गई होगी ?

उत्तर **3:**

- सु षर-वाद्यों से तात्पर्य ऐसे वाद्य यंत्रों से है जिन्हें हवा से बजाया जाता है।
- शहनाई एक ऐसा वाद्य है, जो अत्य धक मधुर और हृदय को छूने वाला स्वर उत्पन्न करता है। इन वाद्यों में कसी अन्य वाद्य का स्वर शहनाई की तरह मीठा और आकर्षक नहीं होता।
- शहनाई में व भन्न रागों और रा गनियों को सुरों में ढालने की वशेष क्षमता होती है, जिसे अन्य कसी सु षर वाद्य से नहीं जोड़ा जा सकता।
- इन वशेषताओं के कारण शहनाई को 'सु षर-वाद्यों के शाह' की उपा ध दी गई होगी।

प्रश्न 4 आशय स्पष्ट कीजिए-

'फटा सुर न बख्शें। लुं गया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।'

'मेरे मा लक सुर बख्श दे । सुर में वह तासीर पैदा कर क आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ ।'

उत्तर **4:**

• आशय: बिस्मिल्ला खाँ अपनी कला को सर्वा धक महत्वपूर्ण मानते थे, न क भौतिक दिखावे को। जब उन्हें फटी लुंगी पहनने से मना कया गया, तो उन्होंने कहा क ईश्वर फटा हुआ सुर न दें क्यों क लुंगी आज फटी है तो कल सल भी सकती है, ले कन सुर एक बार बिगड़ गया तो उसे ठीक नहीं कया जा सकता। इसका अर्थ है क उनके लए शहनाई का सुर अ धक महत्वपूर्ण है, न क बाहरी कपड़े या आंतरिक सौंदर्य।

• आशय: बिस्मिल्ला खाँ खुदा के सामने हाथ जोड़कर कहते हैं, "हे मेरे मा लक! मुझे सच्चा सुर दे, जो इतनी ताजगी और प्रभाव से भरा हो क सुनने वाले लोग आँसू बहा दें।" उनका अ भप्राय यह है क सुर की आवाज ऐसी हो क सुनने वाले उसकी लहरों में समाहित हो जाएं, जिससे उनके दिल में गहरी भावना उत्पन्न हो और उनका हृदय पूरी तरह से सुर के साथ जुड़ जाए।

प्रश्न 5. काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्य थत करते थे?

उत्तर 5-

• समय के साथ काशी में कई बदलाव हुए।

• जैसे काशी के पक्के महल से मलाई और बर्फ गायब हो गई, वैसे ही काशी से संगीत, साहित्य और कला की कई महत्वपूर्ण परंपराएँ भी समाप्त हो गईं।

• इन बदलावों को देखकर बिस्मिल्ला खाँ बहुत दुखी होते थे।

प्रश्न 6 पाठ में आए कन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं क-

(क) बिस्मिल्ला खाँ मली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) वे वास्त वक अर्थों में एक सच्चे इनसान थे।

उत्तर **6:** (क) बिस्मिल्ला खाँ मली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे:

- बिस्मिल्ला खाँ काशी के बालाजी मंदिर के नौबतखाने में शहनाई बजाने का अभ्यास करते थे।

- वे काशी के संकट मोचन मंदिर में हनुमान जयंती पर आयोजित संगीत सभा में भाग लेते थे।
- उन्हें काशी वश्वनाथ के प्रति अपार श्रद्धा थी, और जब भी वे काशी से बाहर रहते थे, वे वश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुंह करके बैठते थे और उनके लए शहनाई बजाते थे।
- उनका मानना था क काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं है। यहाँ गंगा, बाबा वश्वनाथ और बालाजी मंदिर हैं।
- मुहर्रम के दौरान वे दस दिन तक हज़रत इमाम हुसैन के प्रति शोक मनाते थे। वे कसी राग-रा गनी में भाग नहीं लेते थे और शोक के समय शहनाई बजाते हुए दालमंडी की ओर पैदल जाते थे। इन उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है क बिस्मिल्ला खाँ एक मली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) वे वास्त वक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे:

- बिस्मिल्ला खाँ में धर्म या जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था।
- वे बाबा वश्वनाथ और बालाजी मंदिर में शहनाई बजाते समय वही श्रद्धा रखते थे, जैसी श्रद्धा वे मुहर्रम के समय मातमी सुरों में व्यक्त करते थे।
- वे भारत की गंगा-जमुनी संस्कृति और सांप्रदायिक सौहार्द्र के प्रतीक थे।
- बिस्मिल्ला खाँ ने अपनी ज़िंदगी में कभी भी अपने बचपन की बातें, फल्म देखने का शौक और संगीत के प्रति प्रेम को छिपाया नहीं। वे इन सब बातों को खुले दिल से साझा करते थे।
- ईश्वर से उन्होंने कभी सुख-समृद् ध की प्रार्थना नहीं की; वे केवल सच्चे सुर की माँग करते थे।
- उनके जीवन में कभी अहंकार नहीं था। वे हमेशा वनम्र बने रहे और संगीत के प्रति अपनी सीख को जारी रखते थे।
- वे हमेशा कहते थे क उन्हें सातों सुरों का सही उपयोग अभी तक नहीं आ सका।
- महान संगीतकार होने के बावजूद वे कभी भी अपनी सादगी नहीं भूलते थे। उनका कहना था क उन्हें भारतरत्न शहनाई के कारण मला, न क लुंगी के कारण।
- वे इस बात से दुखी थे क आजकल गायकों के मन में संगतियों के लए कोई सम्मान नहीं बचा है। इन घटनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है क बिस्मिल्ला खाँ वास्त वक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

प्रश्न 7. बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध कया।

उत्तर 7-

• बिस्मिल्ला खाँ के दोनों मामा, सादिक हुसैन और अलीबख्श, प्र सद्ध शहनाई वादक थे। उनका दिन बालाजी

मंदिर के पास शहनाई बजाने से शुरू होता था। उनके शहनाई वादन को सुनकर बिस्मिल्ला खाँ को भी प्रेरणा मली।

• बिस्मिल्ला खाँ के नाना भी एक कुशल शहनाई वादक थे। उनकी शहनाई की मधुरता से छोटे बिस्मिल्ला को लगता क इसमें कुछ खास मठास जरूर होगी, इस लए वे उसे चखने की को शश करते।

• बिस्मिल्ला खाँ जब रियाज़ के लए जाते, तो उनका रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के घर से होकर जाता था। वहां वे ठुमरी, टप्पे और दादरा जैसी रचनाएं सुनते, जो उन्हें बहुत प्रसन्नता देतीं। उनके जीवन के शुरुआती दिनों में इन गायिका बहनों से संगीत के प्रति लगाव हुआ।

• बिस्मिल्ला खाँ जब कुलसुम हलवाइन की दुकान पर जाते, तो वहां कुलसुम द्वारा कचौड़ी में डाला गया घी कलकलाती आवाज़ करता था। इस आवाज़ में उन्हें सारे आरोह-अवरोह सुनाई देते थे।

• इन सभी घटनाओं और व्यक्तियों के साथ-साथ काशी की समृद्ध संगीत परंपरा ने भी बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना को और अ धक प्रगति दी।

रचना और अ भव्यक्ति

प्रश्न 8. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी वशेषताओं ने आपको प्रभा वत कया?

उत्तर 8: उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की वशेषताएँ जो मुझे प्रभा वत करती हैं-

1. सांप्रदायिक सौहार्द: उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का सांप्रदायिक सौहार्द मुझे बहुत प्रभा वत करता है। गंगा के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा, बाबा वश्वनाथ और बालाजी के मंदिरों में शहनाई वादन, और मुहर्रम के मातमी जुलूस में नौहा बजाने के लए आठ कलोमीटर पैदल चलने की उनकी भावना ने सांप्रदायिक सौहार्द की मसाल पेश की है।

2. निष्काम भाव से संगीत साधना: बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना कभी भी धन कमाने का जरिया नहीं थी। वे हमेशा ईश्वर से सच्चे सुरों का वरदान मांगते रहे, न क संप त्त की इच्छाएँ प्रकट कीं। उनके इस निष्काम भाव ने मुझे बहुत प्रभा वत कया।

3. निश्छल स्वभाव: उनकी हंसी बच्चों जैसी भोली और स्वाभा वक थी। वे अपने जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों के बारे में खुले मन से बात करते थे, जैसे क बचपन में फल्म देखने की बात और रसूलनबाई तथा बतूलनबाई के संगीत से प्रेरणा लेने की बात।

4. सादगी पूर्ण जीवन: बिस्मिल्ला खाँ का जीवन सादगी से भरा हुआ था। भारतरत्न प्राप्त करने के बावजूद वे कभी भी फटी हुई लुंगी पहनने में संकोच नहीं करते थे। उनकी यह सादगी मुझे बहुत प्रभा वत करती है।

5. वनम्रता: बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व में गहरी वनम्रता थी। शहनाई के सबसे बड़े उस्ताद होने के बावजूद वे हमेशा कहते थे क उन्हें आज भी सुरों को सही तरीके से निभाने की पूरी तमीज़ नहीं आई।

6. संगतियों के प्रति आदर: बिस्मिल्ला खाँ का संगतियों के प्रति गहरा आदर था। वे हमेशा दुख प्रकट करते थे क गायक लोग संगतियों का सम्मान नहीं करते।

इन सभी वशेषताओं ने मुझे उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व से गहरी प्रेरणा दी है।

प्रश्न 9. मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में ल खए।

उत्तर 9- बिस्मिल्ला खाँ का मुहर्रम से गहरा संबंध था। मुहर्रम के दिनों में वे हजरत इमाम हुसैन और उनके परिवार के प्रति शोक व्यक्त करते थे। वे पूरे दस दिनों तक शहनाई नहीं बजाते थे और कसी संगीत कार्यक्रम में भी हिस्सा नहीं लेते थे।

मुहर्रम की आठवीं तारीख को बिस्मिल्ला खाँ खड़े होकर शहनाई बजाते थे। वे दालमंडी से फातमान तक, जो लगभग आठ कलोमीटर दूर था, पैदल चलकर नौहा गाते हुए जाते थे। उनकी आँखों में इमाम हुसैन और उनके परिवार की शहादत पर ग़म था। इस समय बिस्मिल्ला खाँ का मानवीय रूप देखकर उनके प्रति गहरी श्रद्धा का अनुभव होता था।

प्रश्न 10. बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे, तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर 10-

• उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के अद् वतीय कलाकार थे। उन्होंने कभी अपनी कला को केवल धन अर्जित करने का साधन नहीं माना, जिसके कारण उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित कया गया।

• वे नमाज के बाद हमेशा एक वशेष प्रार्थना करते थे, "मेरे मा लक, मुझे एक ऐसा सुर दीजिए, जो आँखों से अनगढ़ मोती जैसे आँसू निकलवाए।"

• वे अपनी कला को हमेशा पूर्ण नहीं मानते थे। वे हमेशा यह सोचते थे क उन्हें सातों सुरों के सही उपयोग में अभी तक सलीका क्यों नहीं आया।

• बिस्मिल्ला खाँ अपनी कला को ईश्वर की दी हुई एक अनमोल भेंट मानते थे और इसे भगवान की आराधना (जैसे बाबा वश्वनाथ और बालाजी आदि की) और हज़रत इमाम हुसैन के प्रति शोक व्यक्त करने में इस्तेमाल करते थे।

• वे घंटों रियाज़ करते हुए अपनी कला की पूजा करते थे।

• जब भी लोग उनकी कला की सराहना करते, वे उसे अपनी कला नहीं बल्कि ईश्वर की कृपा मानते थे।

• उन्होंने हमेशा अपनी कला को सर्वोत्तम माना, जब क धन, प्रतिष्ठा और आभूषणों को कोई महत्व नहीं दिया। एक बार उनकी शष्या ने उन्हें फटी लुंगी पहनने से रोका, तो उन्होंने उत्तर दिया, "यह भारत रत्न मुझे शहनाई से मला है, लुंगी से नहीं।"

• बिस्मिल्ला खाँ के अंदर संगीत को पूरी तरह से सीखने की जिजी वषा और आस्था जीवन भर बनी रही।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं क उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ कला के सच्चे उपासक थे।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 11. निम्न ल खत मश्र वाक्यों के उपवाक्य छाँटकर भेद भी ल खए-

(क) यह जरूर है क शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लए उपयोगी हैं।

उत्तर:

(i) यह ज़रूर है - प्रधान उपवाक्य

(ii) शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लए उपयोगी हैं - आ श्रत संज्ञा उपवाक्य

(ख) रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।

उत्तर:

(i) रीड अंदर से पोली होती है - प्रधान उपवाक्य

(ii) जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है - आ श्रत वशेषण उपवाक्य

(ग) रीड नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के कनारों पर पाई जाती है।

उत्तर:

(i) रीड नरकट से बनाई जाती है - प्रधान उपवाक्य

(ii) जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के कनारों पर पाई जाती है - आ श्रत वशेषण उपवाक्य

(घ) उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा।

उत्तर:

(i) उनको यकीन है - प्रधान उपवाक्य

(ii) कभी खुदा यूँ ही उन पर मेहरबान होगा - आ श्रत संज्ञा उपवाक्य

(ङ) हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है जिसकी गमक उसी में समाई है।

उत्तर:

(i) हिरन अपनी ही महक से परेशान पूरे जंगल में उस वरदान को खोजता है - प्रधान उपवाक्य

(ii) जिसकी गमक उसी में समाई है - आ श्रत वशेषण उपवाक्य

(च) खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है क पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एका धकार से सीखने की जिजी वषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा।

उत्तर:

(i) खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है - प्रधान उपवाक्य

(ii) पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एका धकार से सीखने की जिजी वषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा - आ श्रत संज्ञा उपवाक्य

प्रश्न 12. निम्न ल खत वाक्यों को म श्रत वाक्यों में बद लए-

(क) इसी बालसुलभ हँसी में कई यादें बंद हैं।

उत्तर: यही वह बालसुलभ हँसी है, जिसमें कई यादें बंद हैं।

(ख) काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है।

उत्तर: काशी में संगीत आयोजन की एक परंपरा है, जो प्राचीन और अद्भुत है।

(ग) धत्! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया पे मला है, लुं गया पे नाहीं।

उत्तर: धत्! पगली, यह जो भारतरत्न हमें मला है, वह शहनाई पर मला है, लुंगी पर नहीं।

(घ) काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

उत्तर: काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को प्रेरणा देता रहा है क वे एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहें।

पाठेतर स क्रयता

• कल्पना कीजिए क आपके वद्यालय में कसी प्र सद्ध संगीतकार के शहनाई वादन का कार्यक्रम आयोजित कया जा रहा है। इस कार्यक्रम की सूचना देते हुए बुलेटिन बोर्ड के लए नोटिस बनाइए ।

उत्तर- वद्यालय सूचना बोर्ड

वषय: शहनाई वादन कार्यक्रम

प्रय वद्या र्थयों,

हमारे वद्यालय में एक वशेष संगीत कार्यक्रम का आयोजन कया जा रहा है, जिसमें प्र सद्ध शहनाई वादक [संगीतकार का नाम] जी शहनाई वादन प्रस्तुत करेंगे। यह कार्यक्रम वद्यालय के [स्थान का नाम] में [तारीख] को [समय] बजे आयोजित होगा।

यह एक अद्भुत अवसर है, जहाँ आप सभी भारतीय शास्त्रीय संगीत के इस उत्कृष्ट रूप का अनुभव कर सकेंगे। सभी वद्या र्थयों को इस कार्यक्रम में उपस्थित होने के लए आमंत्रित कया जाता है।

कृपया समय पर उपस्थित होकर इस संगीत आनंद का लाभ उठाएं।

सादर,
[वद्यालय का नाम]
[तारीख]

- आप अपने मनपंसद संगीतकार के बारे में एक अनुच्छेद ल खए।

उत्तर- मेरे मनपसंद संगीतकार का नाम ए. आर. रहमान है। वे भारतीय फल्म संगीत के एक महान maestro हैं, जिन्होंने न केवल बॉलीवुड बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपने संगीत का जादू फैलाया है। उनका संगीत सुनने में बहुत ही भावनात्मक और प्रभावशाली होता है। रहमान का संगीत व भन्न शै लयों को समाहित करता है, जिसमें शास्त्रीय संगीत, पश्चिमी शै लयाँ और भारतीय लोक संगीत का अद्भुत मश्रण होता है। उनके द्वारा

र चत गीतों में एक खास प्रकार की आत्मा और गहराई होती है, जो सुनने वाले को एक अलग दुनिया में ले जाती है।

रहमान की सफलता का राज उनकी संगीत में नयापन और ताजगी है। उन्होंने फल्म "दिल से", "रंग दे बसंती", "तनु वेड्स मनु" जैसी फल्मों में संगीत दिया और उन्हें अपार सफलता मली। उनका संगीत न केवल भारत में, बल्कि वदेशों में भी बेहद पसंद कया जाता है। उनके द्वारा बनाए गए संगीत को हमेशा एक कला के रूप में देखा जाता है, जो कसी भी फल्म या दृश्य को और अ धक प्रभावशाली बना देता है।

रहमान का संगीत न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि यह एक अनुभव है, जो शांति और उत्साह का संदेश देता है। वे संगीत के माध्यम से सामाजिक और भावनात्मक मुद्दों को भी उठाते हैं, जिससे उनके गीतों का प्रभाव लंबे समय तक बना रहता है।

- हमारे साहित्य, कला, संगीत और नृत्य को समृद्ध करने में काशी (आज के वाराणसी) के योगदान पर चर्चा कीजिए।

उत्तर- काशी (आज का वाराणसी) भारतीय संस्कृति, साहित्य, कला, संगीत और नृत्य का एक प्रमुख केंद्र रही है और इसका योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। काशी न केवल धा र्मक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से भी अत्य धक समृद्ध रही है। यहाँ पर चर्चा की जाती है:

1. साहित्यिक योगदान:

काशी भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण केंद्र रही है। यह नगर संस्कृत, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का महत्वपूर्ण स्थल था। काशी के वद्वान और साहित्यकारों ने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक साहित्य को समृद्ध कया। काशी के प्र सद्ध संत, क व और साहित्यकार जैसे तुलसीदास, भर्तृहरी, और कबीर ने यहाँ से अपना योगदान दिया। तुलसीदास द्वारा र चत *रामचरितमानस* ने न केवल धा र्मक बल्कि साहित्यिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. कला और शल्प:

काशी में भारतीय कला की कई धारा के उत्कर्ष की शुरुआत हुई। यहाँ के प्राचीन मंदिरों की वास्तुकला अद् वतीय है, और काशी के कारीगरों ने प्राचीन कला रूपों को संर क्षत कया। काशी के पेंटिंग और मूर्तिकला की शै लयाँ समय के साथ वक सत हुई। काशी में हस्त शल्प, वशेषकर बनारसी सा ड़यों, धातु कला और मट्टी के बर्तनों का प्रचलन है, जो काशी की सांस्कृतिक पहचान को स्था पत करते हैं।

3. संगीत और नृत्य:

काशी का संगीत और नृत्य में भी गहरा योगदान रहा है। यहाँ का सांगीतिक माहौल प्राचीन काल से ही प्रमुख रहा है। काशी के संगीताचार्य, जैसे पं. र वशंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान (शहनाई के मास्टर) और पं. कशन महाराज (tabla) ने भारतीय संगीत को वश्व स्तर पर प्र सद्ध कया। काशी में कई संगीत वद्यालय हैं जहाँ शास्त्रीय संगीत और नृत्य की शक्षा दी जाती है।

नृत्य के क्षेत्र में काशी का योगदान वशेष रूप से कथक में है। यहाँ के प्र सद्ध कथक नर्तक, जैसे बिरजू महाराज ने कथक को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया। काशी में यह नृत्य शैली आज भी जी वत है और इसके प्र शक्षण के लए कई संस्थान स्था पत हैं।

4. धा र्मक और सांस्कृतिक धरोहर:

काशी के मंदिरों और घाटों की सांस्कृतिक धरोहर ने इस क्षेत्र को दुनिया भर में प्र सद्ध कया। काशी के गंगा घाट, वशेष रूप से दशाश्वमेध घाट, पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों और पूजा समारोहों ने काशी को एक अद् वतीय सांस्कृतिक स्थल बना दिया। धा र्मक और सांस्कृतिक गति व धयाँ यहाँ के सामाजिक जीवन का अ भन्न हिस्सा रही हैं।

निष्कर्ष:

काशी ने भारतीय साहित्य, कला, संगीत, नृत्य और संस्कृति को न केवल संर क्षत कया, बल्कि उन्हें नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। काशी की धरोहर आज भी दुनिया भर में अपनी अनमोल वरासत को प्रकट करती है और भारतीय संस्कृति के गौरव को बढ़ाती है।

• काशी का नाम आते हो हमारी आँखों के सामने काशी की बहुत-सी चीजें उभरने लगती हैं, वे कौन-कौन सी हैं?

उत्तर- काशी का नाम सुनते ही हमारी आँखों के सामने कई ऐसी चीजें उभरने लगती हैं, जो इस शहर की वशेषता और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाती हैं। कुछ प्रमुख चीजें जो काशी से जुड़ी होती हैं, वे निम्न ल खत हैं:

1. वश्वनाथ मंदिर: काशी का सबसे प्र सद्ध मंदिर, जो भगवान शव को सम र्पत है। यह हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।
2. गंगा नदी: काशी गंगा के कनारे बसा हुआ है। गंगा के घाट, जैसे दशाश्वमेध घाट, म ण क र्णका घाट आदि, काशी की धा र्मक और सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक हैं।
3. घाटों की दृश्यावली: काशी के घाटों पर होने वाली पूजा-अर्चना और गंगा आरती का दृश्य बहुत ही प्र सद्ध है।
4. काशी की ग लयाँ: काशी की संकरी ग लयाँ और बाज़ार, जैसे क वष्णु चौक, भवानी महल, आदि, शहर के पारंपरिक जीवन को दर्शाते हैं।
5. बनारसी साड़ी: काशी को बनारसी साड़ी के लए भी जाना जाता है, जो यहाँ की प्रमुख सांस्कृतिक धरोहर है।
6. बनारसी पान: काशी का पान यहाँ के प्र सद्ध खाद्य पदार्थों में से एक है।
7. काशी की सांस्कृतिक धरोहर: यहाँ के संगीत, नृत्य, और साहित्यिक परंपराएँ, जैसे की बनारस घराना (संगीत), काशी नृत्य, आदि।

8. शव की उपासना: काशी को " शव की नगरी" कहा जाता है, और यहाँ की पूजा व धयाँ और धा र्मक महत्व इसे वशेष बनाते हैं।

इन सब चीजों का काशी के साथ गहरा संबंध है और यही काशी की पहचान को बनाते हैं।

पाठ 11: नौबतखाने मे इबादत पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

लघु प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. यतींद्र मश्र के अनुसार, बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का कौन-सा अनुभव संगीत के प्रति उनका प्रेम जगाता था?

उत्तर: यतींद्र मश्र बताते हैं क बालाजी मंदिर के नौबतखाने में अपने मामाओं की शहनाई सुनकर और रसूलनबाई-बतूलनबाई की ठुमरी सुनकर बिस्मिल्ला खाँ के मन में संगीत के प्रति प्रेम जागा।

प्रश्न 2. यतींद्र मश्र ने शहनाई और डुमराँव के संबंध को कैसे व र्णत कया है?

उत्तर: यतींद्र मश्र के अनुसार, डुमराँव की सोन नदी के कनारे उगने वाली नरकट घास से शहनाई की रीड बनती थी, जिसने इस वाद्य को व शष्ट ध्वनि प्रदान की।

प्रश्न 3. यतींद्र मश्र के लेखन के अनुसार, बिस्मिल्ला खाँ काशी को क्यों नहीं छोड़ना चाहते थे?

उत्तर: यतींद्र मश्र लखते हैं क बिस्मिल्ला खाँ काशी को अपनी जन्नत मानते थे, क्यों क यहाँ गंगा, वश्वनाथ मंदिर और उनके पूर्वजों की संगीत परंपरा थी।

प्रश्न 4. यतींद्र मश्र ने बिस्मिल्ला खाँ की सादगी को कैसे चत्रित कया है?

उत्तर: यतींद्र मश्र के अनुसार, भारतरत्न जैसा सम्मान पाने के बाद भी बिस्मिल्ला खाँ साधारण जीवन जीते रहे। वे फटी लुंगी पहनकर शहनाई बजाते थे और मानते थे क सम्मान उनकी कला को मला है, न क उन्हें।

प्रश्न 5. यतींद्र मश्र के लेखन में बिस्मिल्ला खाँ और मुहर्रम का क्या संबंध दर्शाया गया है?

उत्तर: यतींद्र मश्र ने वर्णन कया है क मुहर्रम के दस दिनों तक बिस्मिल्ला खाँ शहनाई नहीं बजाते थे, ले कन आठवें दिन दालमंडी तक पैदल नौहा गाते हुए जाते थे, जो उनकी धा र्मक आस्था और संगीत के बीच सामंजस्य को दर्शाता है।

प्रश्न 6. यतींद्र मश्र के अनुसार बिस्मिल्ला खाँ के जीवन में कुलसुम हलवाइन की क्या भू मका थी?

उत्तर: यतींद्र मश्र ने लखा है क कुलसुम हलवाइन की दुकान पर कचौड़ी तलने की आवाज से बिस्मिल्ला खाँ को संगीत के सुर सुनाई देते थे। यह अनूठा अनुभव उनके संगीतमय व्यक्तित्व को समझने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

प्रश्न 7. यतींद्र मश्र ने बिस्मिल्ला खाँ और शहनाई के संबंध को कस रूप में प्रस्तुत कया है?

उत्तर: यतींद्र मश्र के लेखन में शहनाई को बिस्मिल्ला खाँ की आत्मा के रूप में चत्रित कया गया है। वे बताते हैं क खाँ साहब के लए शहनाई सर्फ एक वाद्य नहीं, बल्कि ईश्वर से जुड़ने का माध्यम थी।

प्रश्न 8. यतींद्र मश्र के अनुसार बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना में काशी की क्या भू मका थी?

उत्तर: यतींद्र मश्र के लेखन के अनुसार, काशी की सांस्कृतिक धरोहर और संगीत परंपरा ने बिस्मिल्ला खाँ की कला को पूर्णता प्रदान की। यहाँ के मंदिरों और घाटों ने उनके संगीत को आध्यात्मिक गहराई दी।

प्रश्न 9. यतींद्र मश्र ने बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व के कस पहलू को सबसे अ धक महत्वपूर्ण बताया है?

उत्तर: यतींद्र मश्र ने बिस्मिल्ला खाँ की सादगी और सांप्रदायिक सद्भाव को उनके व्यक्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण पहलू बताया है। वे लखते हैं क खाँ साहब ने संगीत के माध्यम से हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश दिया।

प्रश्न 10. यतींद्र मश्र के अनुसार बिस्मिल्ला खाँ को भारतरत्न मलने के बाद क्या बदलाव आया?

उत्तर: यतींद्र मश्र स्पष्ट करते हैं क भारतरत्न मलने के बाद भी बिस्मिल्ला खाँ के जीवनशैली और संगीत के प्रति समर्पण में कोई बदलाव नहीं आया। वे पहले की तरह ही सादगीपूर्ण जीवन जीते रहे।

प्रश्न 11: 'नौबतखाने में इबादत' में अमीरुद्दीन की संगीत यात्रा की शुरुआत कैसे होती है?

उत्तर: यतींद्र मश्र के शब्दों में, अमीरुद्दीन उर्फ बिस्मिल्ला खाँ की संगीत यात्रा काशी के बालाजी मंदिर के नौबतखाने से शुरू होती है। वहाँ की शहनाई ध्वनि और रसूलनबाई-बतूलनबाई के गायन ने उनके मन में सुरों के प्रति आकर्षण जगाया। अपने मामाओं से रागों की बातें सुनते हुए, वह धीरे-धीरे संगीत की समझ वक सत करते हैं। यह परंपरा और वातावरण ही उनके सुरों की पहली पाठशाला बनती है।

प्रश्न 12: यतींद्र मश्र ने बालसुलभ घटनाओं के ज़रिए बिस्मिल्ला खाँ को कैसे चत्रित कया है?

उत्तर: यतींद्र मश्र ने बिस्मिल्ला खाँ की बचपन की घटनाओं को बड़ी आत्मीयता से प्रस्तुत कया है। जैसे— पत्थर पटककर 'सम' पर प्रति क्रया देना, शहनाई ढूँढना, सुलोचना की फल्में देखना और संगीत में 'संगीतमय कचौड़ी' ढूँढना। ये घटनाएँ उनके बालमन की मासू मयत, जिज्ञासा और संगीत के प्रति स्वाभा वक लगाव को दर्शाती हैं। इन प्रसंगों से बिस्मिल्ला खाँ का सजीव चत्र सामने आता है।

प्रश्न 13: यतींद्र मश्र द्वारा व र्णत बिस्मिल्ला खाँ की 'इबादत' का क्या अर्थ है?

उत्तर: 'नौबतखाने में इबादत' में यतींद्र मश्र बताते हैं क बिस्मिल्ला खाँ के लए संगीत एक इबादत है, एक सच्चे सुर की तलाश। वे पाँचों वक्त की नमाज की तरह सुरों को साधने में लीन रहते हैं। उनका मानना है क सुर में तासीर होनी चाहिए जो सीधे आत्मा को छू जाए। यह समर्पण, वनम्रता और साधना का प्रतीक है, जिससे एक कलाकार और भक्त का स्वरूप उभरता है।

प्रश्न 14: यतींद्र मश्र ने डुमराँव और शहनाई का संबंध कस तरह बताया है?

उत्तर: यतींद्र मश्र बताते हैं क शहनाई और डुमराँव का गहरा संबंध है। शहनाई में उपयोग होने वाली रीड डुमराँव के सोन नदी कनारे पाई जाने वाली खास नरकट से बनती है। यही कारण है क बिस्मिल्ला खाँ का जन्मस्थान डुमराँव शहनाई के लए एक वशेष स्थान रखता है। यह स्थान उनके जीवन और वाद्ययंत्र की नींव को दर्शाता है।

प्रश्न 15: बिस्मिल्ला खाँ की यादों में कौन-से पल संजोए हुए हैं?

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ को अपने बचपन की बातें, सुलोचना की फल्में और कचौड़ी की दुकानें याद आती हैं। यतींद्र मश्र ने इन यादों के माध्यम से खाँ साहब के जीवन को बेहद आत्मीयता से चत्रित कया है।

दीर्घ प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1: 'नौबतखाने में इबादत' पाठ में यतींद्र मश्र ने उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ की संगीत साधना को कस प्रकार चत्रित कया है?

उत्तर: लेखक यतींद्र मश्र ने 'नौबतखाने में इबादत' में उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ की संगीत साधना को भक्ति और तपस्या के रूप में प्रस्तुत कया है। उन्होंने बताया क बिस्मिल्ला ख़ाँ जी के लए संगीत केवल पेशा नहीं था, बल्कि ईश्वर से जुड़ने का माध्यम था। वे अपने संगीत को इबादत मानते थे और प्रतिदिन निय मत रूप से रियाज़ करते थे। उनके संगीत में बनारस की गंगा-जमुनी तहज़ीब झलकती है। लेखक ने उनकी वनम्रता, समर्पण और साधना से प्रेरणा लेने का संदेश दिया है।

प्रश्न 2: उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ बनारस और गंगा से इतना जुड़ाव क्यों महसूस करते थे?

उत्तर: उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ का बनारस और गंगा से आत्मिक जुड़ाव था। उनका जन्म भले ही डुमरांव, बिहार में हुआ हो, ले कन बनारस को उन्होंने अपनी आत्मा माना। वे मानते थे क गंगा की धारा, बनारसी तहज़ीब और वहाँ की संस्कृति उनके संगीत में रची-बसी है। गंगा की सुबह की आरती और बनारसी घाटों की शांति उन्हें रचनात्मक ऊर्जा देती थी। उनका मानना था क यदि गंगा और बनारस न होते तो शायद वे शहनाई वादक न बन पाते।

प्रश्न 3: उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ की वनम्रता पाठ में कस प्रकार दिखाई गई है?

उत्तर: 'नौबतखाने में इबादत' पाठ में उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ की वनम्रता अनेक प्रसंगों में दिखाई गई है। उन्होंने कभी भी अपने यश और प्र सद् ध का घमंड नहीं कया। जब भी कोई उन्हें सम्मानित करता या उनकी प्रशंसा करता, वे उसे ईश्वर की कृपा मानते। वे अपने शष्यों और श्रोताओं के प्रति आदर भाव रखते थे। उन्होंने कभी भी भौतिक सुख-सु वधाओं को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उनके जीवन में सादगी और समर्पण प्रमुख थे।

प्रश्न 4: यतींद्र मश्र ने उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ के संगीत को 'इबादत' क्यों कहा है?

उत्तर: यतींद्र मश्र ने उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ के संगीत को 'इबादत' इस लए कहा है क्यों क उनके लए संगीत कोई व्यावसायिक साधन नहीं था, बल्कि आत्मा की शुद् ध और ईश्वर से जुड़ने का माध्यम था। वे निय मत रूप से रियाज़ करते थे और संगीत को पूजा के रूप में अपनाते थे। उनका हर सुर, हर राग, गंगा की शुद्धता और बनारसी तहज़ीब से ओतप्रोत था। इस लए लेखक ने उनके संगीत को साधना और इबादत की संज्ञा दी है।

प्रश्न 5: बिस्मिल्ला ख़ाँ की देशभक्ति उनके व्यवहार में कैसे झलकती थी?

उत्तर: उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ की देशभक्ति उनके व्यवहार और सोच में स्पष्ट झलकती थी। उन्हें वदेशों से बहुत अच्छे प्रस्ताव मले, ले कन उन्होंने कभी भारत छोड़ने का वचार नहीं कया। वे कहते थे क बनारस और गंगा को छोड़ना उनके लए आत्मा को छोड़ने के समान है। उन्होंने हमेशा भारतीय संगीत को वश्वमंच पर सम्मान दिलाया, ले कन स्वयं भारतीय संस्कृति और मट्टी से जुड़े रहे। उनका यह समर्पण उनकी सच्ची देशभक्ति को दर्शाता है।

प्रश्न 6: यतींद्र मश्र ने उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी वशेषताएँ प्रस्तुत की हैं?

उत्तर:यतींद्र मश्र ने उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ के व्यक्तित्व की अनेक वशेषताएँ प्रस्तुत की हैं—जैसे संगीत के प्रति समर्पण, सादगी, वनम्रता, देशभक्ति, धर्मनिरपेक्षता और आत्मिक चेतना। उन्होंने संगीत को पूजा का माध्यम माना और जीवनभर सादे तरीके से रहे। उनका व्यक्तित्व आध्यात्मिकता और तहज़ीब का संगम था। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे और सांप्रदायिक सौहार्द के प्रतीक थे। लेखक ने उन्हें एक आदर्श संगीत साधक और इंसान के रूप में चत्रित कया है।

प्रश्न 7: बिस्मिल्ला ख़ाँ जी की साधना में 'नौबतखाना' का क्या महत्व था?

उत्तर: 'नौबतखाना' बिस्मिल्ला ख़ाँ जी की साधना का प्रमुख केंद्र था। बनारस के वश्वनाथ मंदिर के पास स्थित इस स्थान पर वे प्रतिदिन रियाज़ करते थे। यह स्थान उनके लए केवल एक अभ्यास स्थल नहीं था, बल्कि उनका 'संगीत मंदिर' था। यहाँ वे सुरों के माध्यम से ईश्वर से संवाद करते थे। लेखक ने बताया है क वहाँ की शांति, मंदिर की घंटियों की आवाज़ और गंगा की हवा उनके रागों में गूंजती थी। यह स्थान उनकी 'इबादत' का प्रतीक था।

प्रश्न 8: बिस्मिल्ला ख़ाँ का जीवन हमें क्या सीख देता है?

उत्तर: बिस्मिल्ला ख़ाँ का जीवन हमें सच्चे समर्पण, सादगी और ईमानदारी की प्रेरणा देता है। उन्होंने दिखाया क प्र सद् ध पाने के बाद भी वनम्रता कैसे बरकरार रखी जा सकती है। उनका जीवन बताता है क कला केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि साधना और आत्मिक अनुभव का मार्ग भी हो सकती है। उनका देशप्रेम, संगीत के प्रति निष्ठा और धर्मनिरपेक्षता आज के युवाओं के लए प्रेरणा स्रोत हैं।

प्रश्न 9: बिस्मिल्ला ख़ाँ को शहनाई का 'भगवान' क्यों कहा जाता है?

उत्तर: बिस्मिल्ला ख़ाँ को शहनाई का 'भगवान' इस लए कहा जाता है क्यों क उन्होंने इस वाद्य को मंदिरों से निकालकर वश्व के मंचों पर सम्मान दिलाया। उनकी शहनाई में ऐसा भाव होता था क श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत में शहनाई को ऊँचा स्थान दिलाया और इसे एकल वादन में मान्यता दिलाई। उनके सुरों में भक्ति, प्रेम और करुणा की भावनाएँ होती थीं। उन्होंने शहनाई को भक्ति का माध्यम बना दिया।

प्रश्न 10: यतींद्र मश्र ने उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ और बनारस के रिश्ते को कैसे व्यक्त कया है?

उत्तर: यतींद्र मश्र ने बिस्मिल्ला ख़ाँ और बनारस के रिश्ते को आत्मा और शरीर के रूप में व्यक्त कया है। उन्होंने बताया क बनारस की ग लयाँ, घाट, मंदिर, और गंगा उनके संगीत का हिस्सा थे। बनारस की सुबह और वहाँ का वातावरण उनकी रचनात्मकता का आधार था। बिस्मिल्ला ख़ाँ जी ने खुद कहा क बनारस को छोड़ा तो सब कुछ छोड़ बैठेंगे। लेखक ने इस रिश्ते को बहुत भावुक और आत्मिक रूप में प्रस्तुत कया है।

प्रश्न 11. मुहर्रम के प्रति बिस्मिल्ला खाँ की भावनाएँ क्या थीं?

उत्तर: मुहर्रम के प्रति बिस्मिल्ला खाँ की गहरी श्रद्धा थी। वे इस दिन शहनाई पर राग नहीं बजाते थे, बल्कि नौहा (शोक गीत) गाते हुए दालमंडी तक पैदल जाते थे। उनकी आँखें इमाम हुसैन की शहादत को याद कर नम हो जाती थीं। यह परंपरा उनके खानदान की पहचान थी। यतींद्र मश्र ने इसके माध्यम से बिस्मिल्ला खाँ की धा र्मक आस्था और संगीत के बीच के सामंजस्य को दर्शाया है।

प्रश्न 12. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-सी वशेषताएँ उन्हें महान बनाती हैं?

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ का व्यक्तित्व सादगी, समर्पण और सांस्कृतिक सद्भाव का प्रतीक था। वे भारतरत्न जैसे सम्मान पाकर भी फटी लुंगी पहनते थे और कहते थे – "सुर की इबादत ही असली पहचान है।" उन्होंने काशी की गंगा-जमुनी संस्कृति को अपने संगीत में जी वत रखा। यतींद्र मश्र ने उनकी इस मानवीय सरलता और कलात्मक महानता को बखूबी चत्रित कया है।

प्रश्न 13. बिस्मिल्ला खाँ के जीवन में रसूलनबाई और बतूलनबाई का क्या महत्व था?

उत्तर: रसूलनबाई और बतूलनबाई बिस्मिल्ला खाँ के बचपन की प्रमुख प्रेरणा स्रोत थीं। ये दोनों गायिकाएँ काशी की संगीत परंपरा की धरोहर थीं, जिनके ठुमरी, दादरा और टप्पे सुनकर अमीरुद्दीन (बिस्मिल्ला खाँ) के मन में संगीत के प्रति गहरा लगाव पैदा हुआ। खाँ साहब ने स्वीकार कया क इन्हीं बहनों ने उनकी "अनुभव की स्लेट पर संगीत की वर्णमाला" लखी। यतींद्र मश्र ने इस संबंध को दर्शाते हुए लखा है क इन गायिकाओं की मधुर आवाज़ें बिस्मिल्ला खाँ के संगीत की नींव बनीं।

प्रश्न 14. शहनाई को 'शाहेनय' क्यों कहा जाता है? इसका ऐतिहा सक महत्व क्या है?

उत्तर: शहनाई को 'शाहेनय' (सु षर वाद्यों का शाह) इस लए कहा जाता है क्यों क यह अरबी मूल के वाद्य 'नय' का उन्नत रूप है, जिसमें नरकट (रीड) की मधुर ध्वनि होती है। ऐतिहा सक रूप से, तानसेन द्वारा र चत 'राग कल्पद्रुम' में शहनाई का उल्लेख मलता है। अवध् के लोकगीतों और मंगलकारी अनुष्ठानों में इसका वशेष स्थान रहा है। यतींद्र मश्र ने बताया है क शहनाई की मंगलध्वनि ने इसे भारतीय संस्कृति में अमर बना दिया।

प्रश्न **15.** बिस्मिल्ला खाँ की दैनिक दिनचर्या और साधना कैसी थी?

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ की दिनचर्या अनुशासन और साधना से परिपूर्ण थी। वे प्रतिदिन पाँच वक्त की नमाज़ के बाद सच्चे सुर की प्राप्ति के लए ईश्वर से प्रार्थना करते थे। उनका मानना था क सुर ईश्वर का वरदान है। वे काशी वश्वनाथ मंदिर की ओर मुँह करके शहनाई बजाते थे, जो उनकी अंतरंग आस्था को दर्शाता था। यतींद्र मश्र ने उनकी इस साधना को "सुर की इबादत" बताया है।

प्रश्न **16.** काशी की संस्कृति ने बिस्मिल्ला खाँ के संगीत को कैसे आकार दिया?

उत्तर: काशी की सांस्कृतिक व वधता ने बिस्मिल्ला खाँ के संगीत को अद् वतीय बनाया। यहाँ की गंगा-जमुनी तहजीब, वश्वनाथ मंदिर की ध्वनियाँ, मुहर्रम का नौहा और होली का अबीर—सभी ने उनके संगीत में समावेश पाया। यतींद्र मश्र के अनुसार, खाँ साहब ने काशी को "अपनी शहनाई की जन्नत" माना और इसके बिना अपने संगीत की कल्पना भी नहीं की।

प्रश्न **17.** बिस्मिल्ला खाँ को भारतरत्न मलने के बाद भी सादगी क्यों पसंद थी?

उत्तर: बिस्मिल्ला खाँ की सादगी उनके व्यक्तित्व का अ भन्न अंग थी। वे मानते थे क सम्मान शहनाई की आवाज़ के लए मला है, न क दिखावे के लए। एक बार उन्होंने अपनी शष्या से कहा था: "भारतरत्न शहनईया पे मला है, लुं गया पे नाहीं।" यतींद्र मश्र ने इस सादगी को उनकी "सच्ची कलात्मकता" का प्रतीक बताया है।

रिक्त स्थान भरिए (Fill in the Blanks):

(कोष्ठक में दिए गए शब्दों से सही उत्तर भरिए)

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म _____ (डुमराँव / काशी) में हुआ था।
2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की शक्षा उनके _____ (मामा / पता) से मली।
3. लेखक यतींद्र मश्र ने बिस्मिल्ला खाँ को _____ का प्रतीक बताया है।
4. शहनाई एक _____ वाद्य यंत्र है।
5. बिस्मिल्ला खाँ _____ मंदिर की दिशा में मुँह करके शहनाई बजाया करते थे।
6. बिस्मिल्ला खाँ _____ (हिंदू / मुस्लिम) होकर भी सभी धर्मों का सम्मान करते थे।
7. लेखक _____ (यतींद्र मश्र / तुलसीदास) ने इस पाठ में बिस्मिल्ला खाँ का वर्णन कया है।
8. खाँ साहब _____ (मुहर्रम / होली) के अवसर पर वशेष रूप से नौहा बजाते थे।
9. बिस्मिल्ला खाँ ने संगीत को _____ मानकर उसकी पूजा की।

10. लेखक ने शहनाई को 'सु षर वाद्यों में _____' कहा है।

उत्तर - ता लका:

1. डुमराँव
2. मामा
3. भारतीय संस्कृति
4. सु षर
5. काशी वश्वनाथ
6. मुस्लिम
7. यतींद्र मश्र
8. मुहर्रम
9. इबादत
10. शाह

बहु वकल्पीय प्रश्न (MCQs):

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म कहाँ हुआ था?

A) काशी

B) डुमराँव

C) पटना

D) लखनऊ

उत्तर: **B)** डुमराँव

2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की शक्षा कससे मली थी?

A) उनके पता से

B) उनके भाई से

C) उनके मामा से

D) उनके गुरु से

उत्तर: **C)** उनके मामा से

3. 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के लेखक कौन हैं?

A) हरिवंश राय बच्चन

B) यतींद्र मश्र

C) सुदर्शन

D) जयशंकर प्रसाद

उत्तर: **B)** यतींद्र मश्र

4. शहनाई कस प्रकार का वाद्य यंत्र है?

A) तंत्री

B) अवनद्ध

C) सु षर

D) घन

उत्तर: **C)** सु षर

5. बिस्मिल्ला खाँ शहनाई को क्या मानते थे?

A) साधन

B) पेशा

C) इबादत

D) अ भनय

उत्तर: **C)** इबादत

6. बिस्मिल्ला खाँ कस मंदिर की ओर मुँह करके शहनाई बजाते थे?

A) दुर्गा मंदिर

B) काशी वश्वनाथ मंदिर

C) संकटमोचन मंदिर

D) बालाजी मंदिर

उत्तर: **B)** काशी वश्वनाथ मंदिर

7. बिस्मिल्ला खाँ कस धर्म से संबंध रखते थे?

A) सख

B) ईसाई

C) हिंदू

D) मुस्लिम

उत्तर: **D)** मुस्लिम

8. बिस्मिल्ला खाँ कस अवसर पर नौहा बजाते थे?

A) ईद

B) होली

C) मुहर्रम

D) दिवाली

उत्तर: C) मुहर्रम

9. लेखक यतींद्र मश्र के अनुसार बिस्मिल्ला खाँ क्या थे?

A) महान चत्रकार

B) अ भनय सम्राट

C) भारतीय संस्कृति के प्रतीक

D) धा र्मक गुरु

उत्तर: C) भारतीय संस्कृति के प्रतीक

10. शहनाई वाद्य यंत्र को लेखक ने क्या कहा है?

A) ताली का संग साथी

B) लय का देवता

C) सु षर वाद्यों में शाह

D) ताल का योद्धा

उत्तर: C) सु षर वाद्यों में शाह

11. बिस्मिल्ला खाँ का जीवन कैसा उदाहरण प्रस्तुत करता है?

A) राजनीतिक संघर्ष का

B) धा र्मक असहिष्णुता का

C) सांस्कृतिक एकता का

D) आ र्थक वपन्नता का

उत्तर: C) सांस्कृतिक एकता का

12. लेखक यतींद्र मश्र का इस पाठ में उद्देश्य क्या है?

A) राजनीति का प्रचार

B) संगीत की आलोचना

C) बिस्मिल्ला खाँ के योगदान को दर्शाना

D) नए वाद्यों का परिचय

उत्तर: C) बिस्मिल्ला खाँ के योगदान को दर्शाना

13. बिस्मिल्ला खाँ कस भाषा में संवाद करते थे?

A) संस्कृत

B) अवधी

C) भोजपुरी

D) अंग्रेज़ी

उत्तर: C) भोजपुरी

14. बिस्मिल्ला खाँ का जीवन कस बात का प्रतीक है?

A) वला सता का

B) धा र्मक द्वेष का

C) साधना और समर्पण का

D) संघर्ष और पराजय का

उत्तर: **C)** साधना और समर्पण का

15. बिस्मिल्ला खाँ कस शहर से जीवनभर जुड़े रहे?

A) कोलकाता

B) दिल्ली

C) काशी

D) आगरा

उत्तर: **C)** काशी